अव्यक्त पालना का रिटर्न

स्वयं को न्यारा करने की विधि

1 सदा यह मंत्र याद रहे कि 'निराकार सो साकार' - यह पार्ट बजा रहे हैं।

2 यह साकार सृष्टि, साकार शरीर स्टेज है। स्टेज और पाटर्धारी दोनों अलग-अलग होते हैं।

3 स्टेज आधार है, पार्टधारी आधार मूर्त्त है, मालिक है।

4 इस शरीर को स्टेज समझने से स्वयं को पार्टधारी स्वतः ही अनुभव करेंगे।

5 सदैव यह समझ कर चलो कि मैं विदेशी हूँ। पराये देश और पुराने शरीर में विश्वकल्याण का पार्ट बजाने के लिए आया हूँ।

11.01.77

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : मीठे बाबा, विश्व परिवर्तन के लिये स्वयं का परिवर्तन करना पड़े इसके लिए आप ने क्या समझानी दी है?

उत्तर : मीठे बच्चे,

1 वर्तमान समय सूक्ष्म संकल्पों को, संस्कारों को जो सोचा और किया। चेक किया और चेंज किया - ऐसे स्वयं की परिवर्तन की मशीनरी फास्ट स्पीड की चाहिए। तब ही विश्व-परिवर्तन की मशीन तेज़ होगी।

2 अभी स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माओं के सोचने और करने में अन्तर है। क्योंकि पुराने भक्ति के संस्कार समय प्रति समय इमर्ज (Emerge) हो जाते हैं।

3 भक्ति में भी सोचना और कहना बहुत होता है। लेकिन करना कम होता है। कहते हैं, बलिहार जायेंगे, लेकिन करते कुछ भी नहीं। कहते हैं 'तेरा', मानते हैं 'मेरा' (अर्थात् अपना)

4 वेसे यहाँ भी सोचते बहुत हैं, रूह-रूहान के समय वायदे बहुत करते हैं - आज से बदल कर दिखायेंगे। लेकिन कहने और करने में अन्तर है। सोचने और करने में अन्तर है। ऐसे विनाश के निमित्त बनी हुई आत्माएं सोचती हैं लेकिन कर नहीं पाती हैं।

5 स्वयं को सम्पन्न करो तो विश्व का कार्य सम्पन्न हो ही जाएगा। विश्व-परिवर्तन की घड़ी आप हो। आधार मूर्त आप हो।

11.01.77

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे-मीठे बाबा, मैसेंजर ग्रुप और तीव्र पुरुषार्थी के लिए कुछ बताइए ?

बापदादा :-

मीठे बच्चे,

★ एक-एक मैसेंजर अनेक आत्माओं को बाप का संदेश देने वाले हैं। अब देखेंगे कि कौन-सा माली, कौन-से फूल लाते हैं और कितना बड़ा गुलदस्ता तैयार करते हो!

★ गुलदस्ता रूहानियत की इसेन्स वाला होना चाहिए। इतने सारे फूल तैयार हो जायेंगे तो विश्व का कल्याण हो जाएगा। बापदादा की यही उम्मीद है।

और,

★ *तीव्र पुरूषार्थ का सहज साधन है - दृढ़ संकल्प। देही-अभीमानी बनने के लिए भी दृढ़ संकल्प करना है कि मैं शरीर नही हूँ, आत्मा हूँ।*

★ कोई भी बात में जब दृढ़ संकल्प रखते हैं तब ही सफलता होती है। दृढ़ संकल्प वाले ही मायाजीत होते हैं।

★ माया को परखने वाला कभी धोखा नहीं खा सकता। *लक्की (Lucky; खुशनसीब) हो जो प्राप्ति से पहले वर्सा लेने का अधिकार प्राप्त हुआ।*

★ जब खुशियों के सागर बाप के बने, तो कितनी खुशी होनी चाहिए! तो सदाकाल की प्राप्ति वालों को सदा खुश रहना चाहिए।

★ 'ज्ञानी अर्थात् सदा खुश।' अज्ञानी अर्थात् कभी-कभी खुश। तो सदा खुश रहने का दृढ़ संकल्प करके जाना।

11.01.77

11-1-72
अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु

स्वयं को न्यारा
करने की विधि

इस शरीर को
स्टेज समझने
से स्वयं को
पार्टधारी
स्वतः
ही मनुभव
करेंगे

यह साकार सृष्टि, साकार शरीर स्टेज है; स्टेज और
पार्टधारी दोनों अलग, अलग होते हैं

स्टेज आधार है

पार्टधारी आधार मूर्त है + मालिक है

11-01-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं परलोक निवासी हूँ।

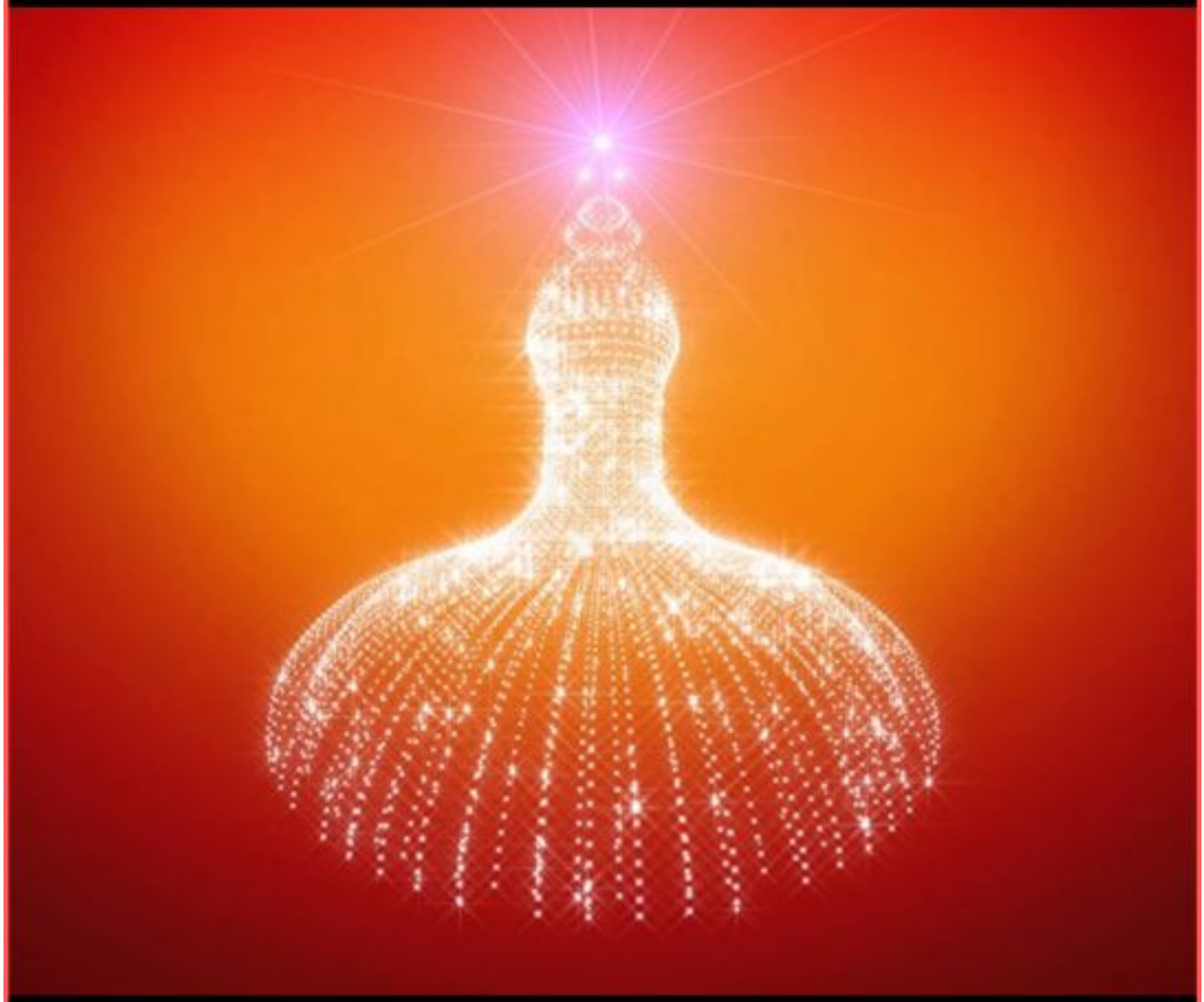

परलोक निवासी अर्थात् पराये देश और पुराने शरीर में विश्वकल्याण का पार्ट बजाने वाली। सेकेण्ड में स्वयं का परिवर्तन करने वाली। अविनाशी रंग, रूप और खुशबू फैलाने वाली।

11-01-77

स्वय का परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार